

सत्य का असर समाचार पत्र

वर्ष 02 अंक 218

कानपुर नगर, शनिवार 26 सितंबर 2026

मूल्य ₹ 2.00

फसल अवशेष प्रबंधन पर पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का समापन

किसानों ने पराली न जलाने की ली शपथ, प्रमाणपत्र किए गए वितरित

कानपुर नगर | 26 सितंबर 2026, शनिवार

कृषि विज्ञान केंद्र, दिलीप नगर में फसल अवशेष प्रबंधन पर आयोजित पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन शुक्रवार को किया गया। कार्यक्रम में कानपुर देहात जनपद के 25 किसानों ने भाग लिया। प्रशिक्षण का उद्देश्य किसानों को आधुनिक कृषि यंत्रों के माध्यम से फसल अवशेष प्रबंधन की तकनीक से अवगत कराना था, ताकि पराली जलाने की समस्या से बचा जा सके और पर्यावरण के साथ-साथ मिट्टी की उर्वरता भी बनी रहे।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को पराली न जलाने की शपथ दिलाई और सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केंद्र, दिलीप नगर के वरिष्ठ वैज्ञानिक, कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे।

डॉ. अजय कुमार सिंह ने बताया कम्पोस्ट का महत्त्व

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अजय कुमार सिंह ने किसानों को बताया कि फसल अवशेषों को जलाने के बजाय कम्पोस्ट बनाकर मिट्टी की उर्वरता बढ़ाई जा सकती है। उन्होंने पराली जलाने से होने वाले वायु प्रदूषण, मिट्टी की जैविक गुणवत्ता में कमी और स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।



पत्रकार जितेंद्र कुमार सिंह पटेल

संपर्क सूत्र: 9956 8340 16

डॉ. दीपक मिश्र ने धान अवशेष और अल्पावधि किस्मों पर दिया जोर

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. दीपक मिश्र ने धान की फसल के अवशेष प्रबंधन पर चर्चा करते हुए बताया कि धान के अवशेषों को जलाने के बजाय सही प्रबंधन से अगली फसल की उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है। उन्होंने अल्पावधि धान की किस्मों - पीबी 1509 और पीबी 1692 के उपयोग की उपयोगिता और लाभ भी बताए, जो अवशेष प्रबंधन में सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

डॉ. कलील खान ने मशीनों की जानकारी दी

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कलील खान ने जीरो टिल ड्रिल, हैप्पी सीडर, सुपर सीडर और स्मार्ट सीडर जैसी मशीनों की कार्यप्रणाली, उपयोगिता और लाभों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि इन मशीनों से न केवल पराली प्रबंधन आसान होता है, बल्कि समय, श्रम और लागत की भी बचत होती है।

डॉ. अरुण कुमार सिंह ने बताया आर्थिक लाभ और सब्सिडी की जानकारी

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अरुण कुमार सिंह ने फसल अवशेष प्रबंधन से होने वाले आर्थिक लाभों पर प्रकाश डाला। उन्होंने किसानों को बताया कि सरकार द्वारा उपलब्ध सब्सिडी का लाभ लेकर किसान इन मशीनों को आसानी से खरीद सकते हैं। उन्होंने विभिन्न योजनाओं और आवेदन प्रक्रिया की भी जानकारी दी, जिससे किसानों को योजना का अधिक से अधिक लाभ मिल सके।

कार्यक्रम में ये रहे उपस्थित

इस अवसर पर डॉ. बी.एल. सिंह (वरिष्ठ वैज्ञानिक), डॉ. राजेश कुमार (वैज्ञानिक), डॉ. प्रवीण कुमार, डॉ. अर्चना सिंह, डॉ. संदीप कुमार, श्री सुनील कुमार (कृषि प्रसार अधिकारी), श्री अमित कुमार (प्रयोगशाला सहायक) सहित बड़ी संख्या में किसान मौजूद रहे। सभी ने फसल अवशेष प्रबंधन की तकनीकों को अपनाने और पराली न जलाने का संकल्प लिया।

राष्ट्रीय स्वरूप

राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत चला नशा मुक्त युवा अभियान

कानपुर । सीएसए के कृषि महाविद्यालय (कैम्पस), लखीमपुर-खीरी में राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा नशा मुक्त युवा अभियान एवं मेरी सेहत, मेरा गर्व कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान दिए गए। इस अवसर पर चिकित्सा परामर्श दाता डॉ. रविन्द्र नाथ ने पोषण और अच्छे स्वास्थ्य का महत्व विषय पर व्याख्यान देते हुए संतुलित एवं पौष्टिक आहार की

पर नशे की लत का असर विषय पर छात्रों को संबोधित करते हुए विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों तथा नशे की लत से होने वाली सामाजिक एवं व्यक्तिगत क्षति के बारे में जानकारी दी। उन्होंने छात्रों से नशे से दूर रहकर सकारात्मक गतिविधियों, खेलकूद एवं रचनात्मक कार्यों में सक्रिय भागीदारी करने का आह्वान किया। कार्यक्रम के दौरान स्वयंसेवकों एवं विद्यार्थियों ने सक्रिय सहभागिता करते हुए नशामुक्त एवं स्वस्थ समाज के निर्माण का संकल्प लिया। वक्ताओं ने युवाओं को अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने तथा नशे जैसी बुराइयों से स्वयं दूर रहने के साथ-साथ समाज में जागरूकता फैलाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. अनिल कुमार सिंह, प्रभारी अधिष्ठाता एवं कार्यक्रम अधिकारी, राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा किया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में महाविद्यालय के शिक्षक डा आनंद कुमार पांडेय, डा अरूण कुमार, डा राज कुमार व कर्मचारी, स्वयंसेवकों एवं विद्यार्थियों का महत्वपूर्ण सहयोग रहा।



कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य युवाओं में नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के साथ-साथ उन्हें स्वस्थ जीवनशैली, संतुलित पोषण एवं बेहतर स्वास्थ्य के प्रति प्रेरित करना रहा। कार्यक्रम के अंतर्गत युवाओं की सामान्य स्वास्थ्य जांच की गई तथा स्वास्थ्य संबंधी महत्वपूर्ण विषयों पर

आवश्यकता, स्वस्थ जीवनशैली तथा युवावस्था में उचित पोषण के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मस्तिष्क के लिए नियमित एवं संतुलित आहार, पर्याप्त नींद तथा शारीरिक सक्रियता आवश्यक है। दूसरे वक्ता डॉ. कुलदीप सिंह ने अच्छे स्वास्थ्य



नशे से दूर रहकर स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का संदेश दिया

संवाददाता/ डीटीएनएन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय (परिसर), लखीमपुर-खीरी में राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत 'नशा मुक्त युवा अभियान' और 'मेरी सेहत, मेरा गर्व' कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने के साथ स्वस्थ जीवनशैली और संतुलित पोषण अपनाने का संदेश दिया गया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों और स्वयंसेवकों की सामान्य स्वास्थ्य जांच की गई। चिकित्सा परामर्शदाता डॉ. रविंद्र नाथ ने 'पोषण और अच्छे स्वास्थ्य का महत्व' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने संतुलित एवं पौष्टिक आहार, पर्याप्त नींद और नियमित शारीरिक सक्रियता को स्वस्थ शरीर और मस्तिष्क के लिए जरूरी



बताया। डॉ. कुलदीप सिंह ने 'अच्छे स्वास्थ्य पर नशे की लत का असर'

विषय पर विद्यार्थियों को संबोधित किया। उन्होंने विभिन्न नशीले पदार्थों

के दुष्प्रभावों के साथ नशे की लत से होने वाली व्यक्तिगत और सामाजिक क्षति की जानकारी दी। उन्होंने युवाओं से नशे से दूर रहकर खेलकूद और रचनात्मक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया। कार्यक्रम में स्वयंसेवकों और विद्यार्थियों ने नशामुक्त एवं स्वस्थ समाज के निर्माण का संकल्प लिया। वक्ताओं ने युवाओं से अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने और समाज में भी नशे के खिलाफ जागरूकता फैलाने की अपील की। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. अनिल कुमार सिंह, प्रभारी अधिष्ठाता एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी ने किया। आयोजन में डॉ. आनंद कुमार पांडेय, डॉ. अरुण कुमार, डॉ. राज कुमार सहित महाविद्यालय के शिक्षकों, कर्मचारियों, स्वयंसेवकों और विद्यार्थियों का सहयोग रहा।



सत्य का असर समाचार पत्र

वर्ष 02 अंक 218

कानपुर, शनिवार 26 सितंबर 2026

मूल्य ₹ 2.00

नशा मुक्ति युवा अभियान से युवाओं को स्वस्थ जीवनशैली का संदेश

राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत 'मेरी सेहत, मेरा गर्व' कार्यक्रम आयोजित

कानपुर नगर | 26 सितंबर 2026, शनिवार

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर के कृषि महाविद्यालय (कैम्पस), लखीमपुर-खीरी में राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा "नशा मुक्त युवा अभियान" एवं "मेरी सेहत, मेरा गर्व" कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य युवाओं में नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के साथ-साथ उन्हें स्वस्थ जीवनशैली, संतुलित पोषण एवं बेहतर स्वास्थ्य के प्रति प्रेरित करना रहा। कार्यक्रम के अंतर्गत युवाओं की सामान्य स्वास्थ्य जांच की गई तथा स्वास्थ्य संबंधी महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान दिए गए।

चिकित्सा परामर्श दाता डॉ. रविन्द्र नाथ ने "पोषण और अच्छे स्वास्थ्य का महत्व" विषय पर व्याख्यान देते हुए संतुलित एवं पौष्टिक आहार, स्वस्थ जीवनशैली तथा युवावस्था में उचित पोषण के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मस्तिष्क के लिए नियमित एवं संतुलित आहार, पर्याप्त नींद तथा शारीरिक सक्रियता आवश्यक है।



पत्रकार जितेंद्र कुमार सिंह पटेल

संपर्क सूत्र: 9956 8340 16

दूसरे वक्ता डॉ. कुलदीप सिंह ने "अच्छे स्वास्थ्य पर नशे की लत का असर" विषय पर छात्रों को संबोधित करते हुए विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों तथा नशे की लत से होने वाली सामाजिक एवं व्यक्तिगत क्षति के बारे में जानकारी दी। उन्होंने छात्रों से नशे से दूर रहकर सकारात्मक गतिविधियों, खेलकूद एवं रचनात्मक कार्यों में सक्रिय भागीदारी करने का आह्वान किया।

कार्यक्रम का आयोजन डॉ. अनिल कुमार सिंह, प्रभारी अधिष्ठाता एवं कार्यक्रम अधिकारी, राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा किया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में महाविद्यालय के शिक्षक डा. आनंद कुमार पांडेय, डा. अरूण कुमार, डा. राज कुमार व कर्मचारी, स्वयंसेवकों एवं विद्यार्थियों का महत्वपूर्ण सहयोग रहा।

मुख्य बातें

- नशे के दुष्प्रभावों के प्रति युवाओं को किया गया जागरूक
- स्वस्थ जीवनशैली, संतुलित पोषण और नियमित स्वास्थ्य जांच पर जोर
- विशेषज्ञों ने दिए उपयोगी व्याख्यान
- युवाओं ने नशामुक्त समाज के निर्माण का लिया संकल्प

फसल अवशेष प्रबंधन पर पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का हुआ समापन

वितरित किए प्रमाणपत्र, फसल अवशेष न जलाने की सभी ने ली शपथ

कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर में फसल अवशेष प्रबंधन पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 25 किसानों को प्रशिक्षण देकर प्रमाणपत्र वितरित किए गए। मुख्य अतिथि डॉ. अजय कुमार सिंह ने पराली न जलाने, कंपोस्ट निर्माण तथा अन्य उपयोगी तकनीकों पर विस्तार से जानकारी दी। किसानों ने फसल अवशेष न जलाने की शपथ ली।

(विस्तृत खबर पृष्ठ 2 पर)

संगोष्ठी

कृषि इंजीनियरिंग कॉलेज के पूर्व अधिष्ठाता डॉ. एनके शर्मा ने आधुनिक कृषि तकनीक पर दिया जोर

खेती के लिए एआई व सेंसर तकनीक अपनाना जरूरी

संवाद न्यूज एजेंसी

इटावा। कृषि इंजीनियरिंग कॉलेज के पूर्व अधिष्ठाता डॉ. एनके शर्मा ने कहा कि टिकाऊ खेती के लिए आधुनिक तकनीक को अपनाना समय की जरूरत है। उन्होंने तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में ऑनलाइन प्रस्तुतीकरण के दौरान कृषि क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), मशीन लर्निंग, आईओटी और सेंसर नेटवर्क



ऑनलाइन संगोष्ठी में प्रस्तुतीकरण देते पूर्व अधिष्ठाता डॉ. एनके शर्मा। स्रोत : स्वयं की उपयोगिता पर विस्तार से प्रकाश डाला।

डॉ. एनके शर्मा ने युवा शोधार्थियों से कहा कि अपने शोध कार्यों में आधुनिक तकनीकों का समावेश करें और परंपरागत कृषि से आगे बढ़कर आधुनिक कृषि तकनीकों पर ध्यान केंद्रित करें। शोध और नवाचार के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाने में सक्रिय योगदान देने का आह्वान किया। कहा कि वर्ष 2050 तक भारतीय आबादी के भरण-पोषण के लिए 60 प्रतिशत सरप्लस भोजन की जरूरत होगी।

कहा कि इसकी पूर्ति नवीन तकनीकों को अपनाए बिना केवल परंपरागत खेती के माध्यम से संभव नहीं होगी। इसलिए कृषि उत्पादन बढ़ाने और खेती को टिकाऊ बनाने के लिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग आवश्यक है। संगोष्ठी के तृतीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. संजय सिंह ने की। तीन दिवसीय शिक्षाविद संगोष्ठी का आयोजन गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत के मुख्य संरक्षण में किया जा रहा है।

कृषक प्रशिक्षण में फसल अवशेष न जलाने की किसानों ने ली शपथ

(पब्लिक एशिया ब्यूरो)।

कानपुर देहात। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीपनगर में फसल अवशेष प्रबंधन पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का विषय मशीनों द्वारा फसल अवशेषों का प्रबंधन था जिसमें पूरे कानपुर देहात जिले के 25 किसानों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को फसल अवशेषों के प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण देना था। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी डॉ अजय कुमार सिंह ने बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने फसल अवशेषों से बनाए जा सकने वाली कंपोस्ट को



बनाने की विधि के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि खेत में पराली को आग लगाने से मिट्टी में विद्यमान सूक्ष्म जीवों और केंचुओं की संख्या में बहुत नुकसान होता है जिससे मिट्टी की उर्वरता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा उन्होंने फसल अवशेष प्रबंधन के अन्य विकल्पों जैसे पराली से बायो गैस उत्पादन,

मशरूम उत्पादन, पैकिंग सामग्री के रूप में फसल अवशेषों के उपयोग आदि पर भी प्रकाश डाला। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ दीपक मिश्रा ने बताया कि गोहूँ धान फसल चक्र में काफी मात्रा में फसलों अवशेष उत्पन्न होते हैं। गोहूँ की प्रणाली पशुओं के चारे के तौर पर इस्तेमाल की जाती है व इसका प्रबंधन करने के लिए डेढ़

महीने का समय भी मिल जाता है इसलिए गोहूँ की पराली प्रबंधन में समस्या नहीं आती। लेकिन धान की लंबी अवधि की किस्मों की कटाई और गोहूँ की बुवाई में सिर्फ 15 दिन का ही समय मिलता है व पराली के चारे के रूप में कम इस्तेमाल से धान की पराली प्रबंधन एक चुनौती है। उन्होंने बताया की धान की कम अवधि की किस्मों जैसे पी बी 1509, पी बी 1692 आदि की बुआई से धान की पराली प्रबंधन के लिए लाभ एक महीने का पर्याप्त समय मिल जाता है इसलिए उन्होंने किसानों से अपील की कि वे जल संरक्षण तथा पराली न जलाने के लिए खुद भी प्रेरित हो व और साथी किसानों को भी जागरूक करें ताकि हम होने वाली पीढ़ियों के लिए एक वातावरण बचा सके। केंद्र के वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने पराली के यथासंभव प्रबंधन द्वारा मृदा स्वास्थ्य पर होने वाले

स्कारात्मक प्रभाव के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने मृदा संरक्षण व गोहूँ की बुवाई में इस्तेमाल होने वाली मृदा संरक्षण केंद्रित मशीनों जैसे वीरो ट्रिल ड्रिल, हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, स्मार्ट सीडर के बारे में बताया व उनके प्रयोग से मृदा के भौतिक गुणों में होने वाले सुधार के बारे में विस्तार से बताया। वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने विभिन्न मशीनों के द्वारा किए जाने वाले पराली प्रबंधन से होने वाले आर्थिक लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी व उन्हें पराली से होने वाले विभिन्न व्यवसायों व उनमें मिलने वाली सब्सिडी के बारे में बताया। इस मौके पर डॉ राजेश राय, डॉ शशीकांत, डॉ निमिषा अवस्थी, उपेन्द्र कुमार सिंह, श्री भगवान पाल, शुभम यादव प्रगतिशील किसान चरन सिंह, अशोक, जय सिंह, आदि ने भी अपने विचार साझा किए।

फसल अवशेष प्रबंधन के पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का हुआ समापन, बटे प्रमाण पत्र

किसानों को दिलायी फसल अवशेष न जलाने की शपथ

(आज समाचार सेवा)

कानपुर देहात, 25 सितम्बर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर में फसल अवशेष प्रबंधन पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का विषय मशीनो द्वारा फसल अवशेषों का प्रबंधन था जिसमें पूरे कानपुर देहात जिले के 25 किसानों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को फसल अवशेषों के प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण देना था। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी डॉ अजय कुमार सिंह ने बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने फसल अवशेषों से बनाए जा



-फसल अवशेष प्रबंधन पर पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण में शपथ दिलाते प्रभारी डॉ अजय कुमार सिंह, वैज्ञानिक डॉ दीपक मिश्रा, वैज्ञानिक डॉ. खलील खान आदि, छाया:आज

सकने वाली कंपोस्ट को बनाने की विधि के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि खेत में पराली को आग लगाने से मिट्टी में विद्यमान सूक्ष्म जीवों और केंचुओं की संख्या में बहुत नुकसान होता है जिससे मिट्टी की उर्वरता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा उन्होंने फसल अवशेष प्रबंधन के अन्य विकल्पों जैसे पराली से बायो गैस उत्पादन, मशरूम उत्पादन, पैकिंग सामग्री के रूप में फसल अवशेषों के उपयोग आदि पर भी प्रकाश डाला। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ दीपक मिश्रा ने बताया कि गेहूँ-धान फसल चक्र में काफी मात्रा में फसलों अवशेष उत्पन्न होते हैं। गेहूँ की प्रणाली पशुओं के चारे के तौर पर इस्तेमाल की जाती है व इसका प्रबंधन करने के लिए डेढ़ महीने का समय भी मिल जाता है इसलिए गेहूँ की पराली प्रबंधन में समस्या नहीं आती। लेकिन धान की लंबी अवधि की किस्मों की कटाई और गेहूँ की बुवाई में सिर्फ 15 दिन का ही समय मिलता है व पराली के चारे के रूप में कम इस्तेमाल से धान की पराली प्रबंधन एक चुनौती है। उन्होंने बताया कि धान की कम अवधि की किस्मों जैसे पी बी 1509, पी बी 1692 आदि की बुवाई से धान की पराली प्रबंधन के लिए लगभग एक महीने का पर्याप्त समय मिल जाता है इसलिए उन्होंने

किसानों से अपील की कि वे जल संरक्षण तथा पराली न जलाने के लिए खुद भी प्रेरित हो व और साथी किसानों को भी जागरूक करें ताकि हम होने वाली पीढ़ियों के लिए एक वातावरण बचा सके। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने पराली के यथासंभव प्रबंधन द्वारा मृदा स्वास्थ्य पर होने वाले सकारात्मक प्रभाव के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने मृदा संरक्षण व गेहूँ की बुवाई में इस्तेमाल होने वाली मृदा संरक्षण केंद्रित मशीनों जैसे जीरो टिल ड्रिल, हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, स्मार्ट सीडर के बारे में बताया व उनके प्रयोग से मृदा के भौतिक गुणों में होने वाले सुधार के बारे में विस्तार से बताया। वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने विभिन्न मशीनों के द्वारा किए जाने वाले पराली प्रबंधन से होने वाले आर्थिक लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी व उन्हें पराली से होने वाले विभिन्न व्यवसायों व उनमें मिलने वाली सब्सिडी के बारे में बताया। इस मौके पर डॉ राजेश राय, डॉ शशीकांत, डॉ निमिषा अवस्थी, उपेन्द्र कुमार सिंह, श्री भगवान पाल, शुभम यादव प्रगतिशील किसान चरन सिंह, अशोक, जय सिंह, आदि ने भी अपने विचार साझा किए।

Crop residue mgmt training concludes

PIONEER NEWS SERVICE

■ Kanpur

The five-day training programme on crop residue management concluded on Friday at the Krishi Vigyan Kendra, Dalip Nagar, a subsidiary of the Chandrashekhar Azad University of Agriculture and Technology, Kanpur.

The topic of the training programme was mechanised crop residue management, in which 25 farmers from across the Kanpur Dehat district participated. The primary objective of this training programme was to educate farmers on various crop residue management techniques. Dr Ajay Kumar Singh, in-charge of the Krishi Vigyan Kendra, attended the programme

as the chief guest. He explained in detail how to make compost from crop residue. He explained that burning stubble in the fields significantly harms the soil's microbes and earthworm populations, negatively impacting soil fertility.

He also highlighted other crop residue management options, such as biogas production from stubble, mushroom production and the use of crop residues as packaging material. Dr Deepak Mishra, a scientist at the centre, explained that a significant amount of crop residue is generated during the wheat-rice crop cycle. Wheat is used as animal fodder, and its management time is one and a half months, so wheat straw management is not a problem.

राष्ट्रीय स्वरूप

पाँच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का हुआ समापन

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर में फसल अवशेष प्रबंधन पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का विषय मशीनो द्वारा फसल अवशेषों का प्रबंधन था जिसमें पूरे कानपुर देहात जिले के 25 किसानों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को फसल अवशेषों के प्रबंधन की विभिन्न तकनीकों के बारे में प्रशिक्षण देना था। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी डॉ अजय कुमार सिंह ने बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने फसल अवशेषों से बनाए जा सकने वाली कंपोस्ट को बनाने की विधि के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि खेत में पराली को आग लगाने से मिट्टी में विद्यमान सूक्ष्म जीवों और केंचुओं की संख्या में बहुत नुकसान होता है जिससे मिट्टी की उर्वरता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा उन्होंने फसल अवशेष प्रबंधन के अन्य विकल्पों

जैसे पराली से बायो गैस उत्पादन, मशरूम उत्पादन, पैकिंग सामग्री के रूप में फसल अवशेषों के उपयोग आदि पर भी प्रकाश



डाला। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ दीपक मिश्रा ने बताया कि गेहूँ-धान फसल चक्र में काफी मात्रा में फसलों अवशेष उत्पन्न होते हैं। गेहूँ की प्रणाली पशुओं के चारे के तौर पर इस्तेमाल की जाती है व इसका प्रबंधन करने के लिए डेढ़ महीने का समय भी मिल जाता है इसलिए गेहूँ की पराली प्रबंध में समस्या नहीं आती। लेकिन धान की लंबी अवधि की किस्मों की कटाई और गेहूँ की बुवाई में

सिर्फ 15 दिन का ही समय मिलता है व पराली के चारे के रूप में कम इस्तेमाल से धान की पराली प्रबंधन एक चुनौती है।

उन्होंने बताया कि धान की कम अवधि की किस्मों जैसे पी बी 1509, पी बी 1692 आदि की बुआई से धान की पराली प्रबंधन के लिए लगभग एक महीने का पर्याप्त समय मिल जाता है इसलिए उन्होंने किसानों से अपील की कि वे जल संरक्षण तथा पराली न जलाने के लिए खुद भी प्रेरित हो व और साथी किसानों को भी जागरूक करें ताकि हम होने वाली पीढ़ियों के लिए एक

वातावरण बचा सके। केंद्र के वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने पराली के यथासंभव प्रबंधन द्वारा मृदा स्वास्थ्य पर होने वाले सकारात्मक प्रभाव के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने मृदा संरक्षण व गेहूँ की बुवाई में इस्तेमाल होने वाली मृदा संरक्षण केंद्रित मशीनों जैसे जीरो टिल ड्रिल, हैप्पी सीडर, सुपर सीडर, स्मार्ट सीडर के बारे में बताया व उनके प्रयोग से मृदा के भौतिक गुणों में होने वाले सुधार के बारे में विस्तार से बताया। वैज्ञानिक डॉ अरुण कुमार सिंह ने विभिन्न मशीनों के द्वारा किए जाने वाले पराली प्रबंधन से होने वाले आर्थिक लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी व उन्हें पराली से होने वाले विभिन्न व्यवसायों व उनमें मिलने वाली सब्सिडी के बारे में बताया। इस मौके पर डॉ राजेश राय, डॉ शशीकांत, डॉ निमिषा अवस्थी, उपेन्द्र कुमार सिंह, श्री भगवान पाल, शुभम यादव प्रगतिशील किसान चरन सिंह, अशोक, जय सिंह, आदि ने भी अपने विचार साझा किए।